के रूप में माना जाता है। इन्हीं के आधार पर प्राकृतिक न्याय की कसौटियां बनी हैं। धर्म का मूल आधार यही है और सभी धर्मों में समान रूप से मान्यता प्राप्त है। इन्हें ही ज्मद ब्वउउंदकउमदजे पुकारा जाता है।

२. धर्म के प्रतीक या मान्यतायें (Symbols or Concepts) : प्रत्येक धर्म के प्रतीक और मान्यतायें भिन्न-भिन्न हैं। पूजा केन्द्र, देवालय, प्रतिमा या प्रतीक, अंक, भाषा, भूगोल या दिशायें, संदेश-वाहक या अवतार के अनुसार अलग-अलग हैं।

३. कर्मकाण्ड एवं परम्परायें (Rituals or Traditions): पूजा पद्धति, भाषा, वेश-भूषा आदि सभ्यता संस्कृति और भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप भिन्न-भिन्न धर्मों के लिये भिन्न-भिन्न होते हैं।

धर्म का कार्यान्वय

धर्म या मूल्यों को आस्था, मान्यता या परम्परा के आधार की बजाय अब तर्क, विवेक या विज्ञान की कसौटी पर जांचना-परखना और परिणामस्वरूप स्वीकार या नकार समाज जान चुका है, सीख चुका है। गति भी अब स्थानीय, क्षेत्रीय या अन्तर्राजीय की बजाय वैश्विक या ब्रह्माण्डीय हो चुकी है।

अतः अब नैतिक मूल्य और धर्म के पारम्परिक स्वरूप में तेजी से बदलाहट हो रही है और इसे मूल्य-ह्रास के रूप में देखा-समझा जा रहा है। परन्तु यह एक नये धर्म और नये मूल्यों की तलाश है या फिर धर्म और मूल्य के विकल्प की खोज। यह नई पीढ़ी का भटकाव नहीं, बल्कि नये की खोज न कर पाने की बैचेनी है।

शायद यह बैचेनी एक ऐसे नये मूल्यों की, नये धर्म की स्थापना का संदेश है जो वैश्विक (Global), ब्रह्माण्डीय (Universal) और साथ ही साथ सर्वकालिक (Eternal) और सर्वग्राही भी हो।

मेरे विवेकानुसार यह नया धर्म, अब कर्तव्य-उत्तरदायित्व एवं प्रामाणिकता की नये मूल्य आधारित व्यवस्था (Duty Oriented System) स्थापित करने की तरफ अग्रसर है।

अब आने वाले समय में "मानव अधिकार" की बजाय "मानव कर्तव्यों का युग" आने वाला दिखाई पड़ने लगा है। राज्य-संचालन, समाज-संचालन एवं जीवन के हर क्षेत्र में कर्तव्य-उत्तरदायित्व निर्वाह एवं प्रमाणिकता की मांग बढ़ रही है और उसी को धर्म और मूल्य की कसौटी के रूप में स्वीकार और उसके कार्यान्वयन की मांग भी बढ़ती जा रही है।

अब नई पीढ़ी-युवावर्ग धर्म, धर्म की नीति, मूल्य, प्रतीक, कर्मकाण्ड और नैतिकता के उपदेश को सुनने, जानने, समझने और सीखने में अपनी शक्ति और समय की बरबादी मानने लगी है। परन्तु साथ-साथ अपने कर्तव्य-उत्तरदायित्व निर्वाह के प्रति सतर्क और समर्पित भी है।

इस प्रकार क्रिया, कर्म, मूल्य, नैतिकता एवं कर्तव्य एक नये धर्म, नई कार्य-संस्कृति, नई कर्तव्य-व्यवस्था के रूप में सर्वसम्मत स्वीकार्यता की ओर तेजी से बढ़ रही है और युवावर्ग उसकी अगुवाई कर रही ह।

मूल्य-बोध

भौतिकता बनाम आध्यात्मिकता

भौतिक समृद्धि ही आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग है

धर्म+अर्थ, काम +मोक्ष= समृद्धि के मूल आधार
नैतिक मूल्य+ भौतिक मूल्य = आध्यात्मिक मूल्य = सुख, समृद्धि, आनन्द
मूल्य बोध = सुखी जीवन = मुक्ति या मोक्ष = स्वतन्त्रता, स्वाधीनता

"मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है" अर्थात् कर्म ही मनुष्य के सम्पूर्ण अस्तित्व को निर्धारित करता है। मनुष्य भी प्रकृति प्रदत्त बौद्धिक शारीरिक शक्ति द्वारा कर्मरत होकर, इस जगत को सुन्दर और सुखप्रद बना सकता है। कर्म के साथ मूल्यों को जोड, कर्म की प्रतिष्ठा पुर्नस्थापित कर, आर्थिक-भौतिक स्वाधीनता ही मोक्ष या आत्म-साक्षात्कार का सहज, सुगम एवं स्वाभाविक मार्ग है।

प्राकृतिक व्यवस्था के अपने कुछ नियम हैं और उन नियमों या जीवन-मूल्यों के विपरीत जब भी मनुष्य अपनी इच्छा शक्ति का प्रयोग करेगा, उसका दुष्परिणाम उसे अवश्य भोगना पड़ेगा। इसलिए जिस मनुष्य का कर्म प्रकृति की व्यवस्था के अनुसार होगा, वही सुख, समृद्धि व महानता के शिखर पर पहुंच सकेगा। ये नियम अनिवार्यतः अनुलंघनीय है। इसमें अपने कार्यान्वयन के लिए अधिकार तथा शक्ति निहित